पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

'साहित्य अमृत' के नवंबर अंक का संपादकीय एक राष्ट्रव्यापी बहस की माँग करता है। आपका विवेचन चिंतापरक एवं सूझ-बूझ भरा है। बालकवि बैरागी व सत्यनारायण जटिया सांसद व मंत्री होने के साथ काव्य-सृजनरत हैं, बधाई! संगीता की रचनाएँ उनके उज्ज्वल कवि-जीवन का संकेत हैं। कथाकार गोविंद मिश्र के उपन्यास-अंश उनके उपन्यास को पूरा पढ़ने को उकसाते हैं। ऋता शुक्ल की कहानी मन को छू गई। कुमुद शर्मा का नागार्जुन पर आलेख व प्रमोद सिनहा की रचनाएँ अच्छी हैं।

—अरविंद मिश्र, भोपाल

'साहित्य अमृत' का नवंबर अंक पढ़ा। संपादकीय के साथ-साथ कहानी एवं आलेख पसंद आए। कविताओं में बालकवि बैरागी की कविता 'करके देखो' अत्यंत मर्मस्पर्शी है। यह कविता नारी चेतना व उत्साह का प्रदर्शन करती है कि अंधकार रूपी समाज में नारी को दीवाली के समान प्रकाशमान होने का पूर्ण अधिकार है, आवश्यकता है तो बस अच्छे नेतृत्व की।

—रूबिना बानो, भीलवाड़ा

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक मिला। आद्योपांत पढ़ा। आपने इसका उत्कृष्ट स्तर बनाए रखा है। न केवल इसका मुद्रण एवं साज-सज्जा आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है, बल्कि इसमें संकलित सामग्री भी रोचक, ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायक है। संपादकीय प्रभावित करता है। डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित का लेख 'कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' काफी खोजपरक है। श्रीमती मंजु मधुकर की कहानी 'अनकही-कही' अच्छी लगीं। कुमुदजी ने अपने लेख में डॉ. धीरेंद्र वर्मा के बारे में यादें ताजा कर दीं।

—कृष्ण कुमार ग्रोवर, नई दिल्ली

'साहित्य अमृत' का दीपावली विशेषांक आद्योपांत पढ़ा। हमेशा की तरह अच्छा लगा। 'दियाधरी का संकल्प', कैलाश वाजपेयी की कविताएँ, ऋता शुक्ल की कहानी एवं प्रश्नोत्तरी इस अंक की उपलब्धियाँ हैं। देश की स्थापित पत्रिकाओं में 'साहित्य अमृत' का पृथक् एवं विशिष्ट स्थान है। इसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। इसका सोच भारतीय धरातल पर पूर्णत: रचनात्मक है।

—नरेंद्र श्रीवास्तव, छत्तीसगढ़

'साहित्य अमृत' का नवंबर अंक आद्योपांत पढ़ा। 'दियाधरी का संकल्प' में शिक्षा जगत् की बात छेड़कर संपादकीय में चार चाँद लगा दिए। प्रतिस्मृति में महादेवी वर्मा की कविताएँ श्रेष्ठ हैं। 'प्रायश्चित्त' कहानी की विषय-वस्तु बढ़िया लगी। 'युग-माँ' एक सहज भारतीय नारी की व्यथा-कथा है। जनपदीय कवि बाबा नागार्जुन का चित्र सहित स्मरण करने के लिए 'साहित्य अमृत' परिवार को धन्यवाद। बहुत सी कविताएँ मन को छू गईं।

—वंदना मिश्रा, बीना

बड़े की गलतियों पर उँगली उठाना और उसे सही राह पर लाना, ऐसी सूझ-बूझ और साहस कम बच्चों में देखने को मिलते हैं। हरिकृष्ण देवसरे की बाल कहानी 'सवाल का जवाब' का तन्मय एक ऐसा ही सूझ-बूझवाला साहसी बालक है। सीतेश आलोक की कहानी 'कैसा आश्चर्य' के केंद्र में यही भाव-सत्य है। राजेंद्र त्यागी का व्यंग्य 'कृश्न चंदर का गधा' आदमी के चारित्रिक पतन पर सीधा कटाक्ष है।

—राधेलाल 'नवचक्र', भागलपुर

दिसंबर अंक समय पर मिल गया। वाचिकता के लोप होने को लेकर आपकी चिंता सांस्कृतिक ह्रास की चिंता है। 'साहित्य अमृत' को जिस तरह वादों के झंझावातों से दूर केवल साहित्य का विस्तृत व उदार मंच आपने बनाया है वह प्रशंसनीय है। आखिर जो विशुद्ध रचनात्मक साहित्य देश के कोने-कोने में लिखा जा रहा है उसे कहीं तो जगह मिले। यह जगह आप दे रहे हैं। 'साहित्य अमृत' की रचनाएँ सुकून देती हैं। प्रतिस्मृति में पुराने लेखकों की रचनाएँ छापकर आप एक तरह का पितृऋण उतार रहे हैं। कुमुद शर्मा का 'हिंदी के निर्माता' स्तंभ तो सभी के लिए संदर्भ का काम करता है।

—रामस्वरूप दीक्षित, टीकमगढ़

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक मिला। बड़ी तन्मयता से एक ही साँस में पढ़ गया। संपादकीय उच्च कोटि का लगा। आलेख, कहानियाँ सभी स्तरीय, पठनीय और मननीय हैं। 'साहित्य में शिशु-लीला', 'वाग्दत्ता', 'लक्ष्मीकांत होने का अर्थ', 'अनकही-कही', 'इनाम-ही-इनाम', 'माँ की सीख' इत्यादि सभी रचनाएँ बेहद अच्छी लगीं। सत्य प्रकाश की कहानी 'अनजाना नौकर' इस अंक की उपलब्धि है। सभी कविताएँ पठनीय हैं।

—विजय सिंह बलवान, बुलंदशहर

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक प्राप्त हुआ। यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है। 'हिंदी के निर्माता' स्तंभ के अंतर्गत डॉ. धीरेंद्र वर्मा के संबंध में पर्याप्त जानकारी प्रदान की गई है। डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अपने आलेख 'कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' में तथाकथित नई कविता का वैदुष्यपूर्ण ढंग से विवेचन किया है। इसी प्रकार डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा ने 'भाषा-प्रयोग' स्तंभ के अंतर्गत अनेक शब्दों के धातुपरक अर्थों पर प्रकाश डाला है। परंतु 'इंद्रशत्रु:' में आद्युदात्त होने पर 'इंद्र' तथा अंत्योदात्त होने पर 'वृत्रासुर' का अर्थ ग्रहण किया जाएगा। इस संबंध में महाभाष्य का संदर्भित प्रसंग द्रष्टव्य है।

—विश्वंभर दयाल अवस्थी, बाँदा

'साहित्य अमृत' के नवंबर अंक के संपादकीय में शिक्षा जगत् में व्याप्त धाँधली को बड़ी शिद्दत से व्यक्त किया गया है। महादेवी वर्मा, सत्यनारायण जटिया 'सत्यज', कैलाश वाजपेयी की कविताएँ अच्छी लगीं। हमफिरोजाँ की 'और सीता नहीं', 'वे मेहनतकश' रचनाएँ आशान्वित करती हैं। बाबा नागार्जुन का स्मरण व चित्र संग्रहणीय है। वरिष्ठ कवियों/साहित्यकारों के छायाचित्र भी आजकल ढूँढ़े से कहाँ मिलते हैं! अंक की सभी कहानियाँ पठनीय हैं।

—अंचल नवनीत मिश्र, भोपाल